# घुघूति बासूति

( उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों का संकलन )

भाग–2
( गढ़वाली )

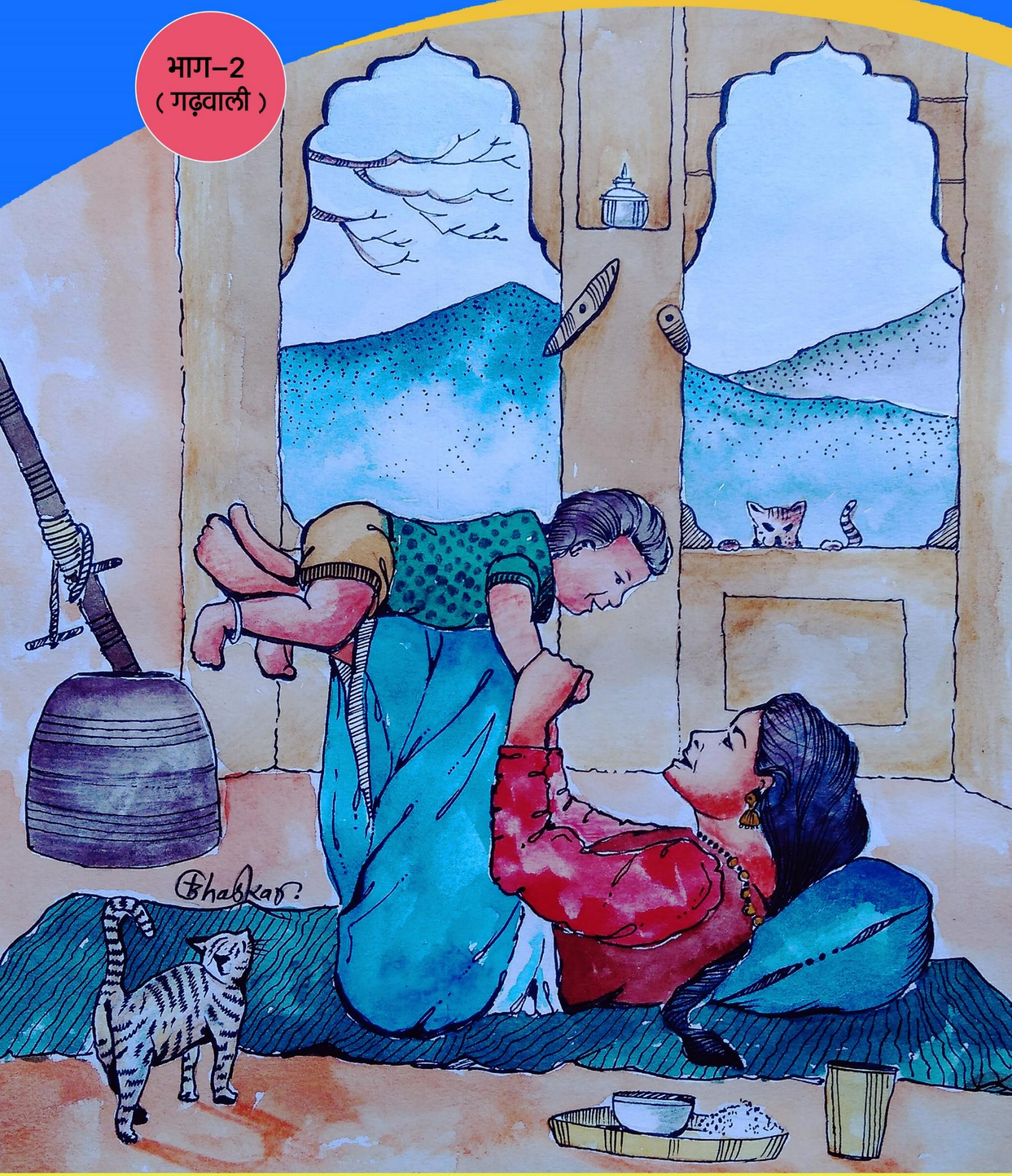


गीत संकलन : हेम पन्त

डिजाइन : विनोद सिंह गड़िया

# घुघूति बासूति

भाग–2 ( गढ़वाली )

## उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों का संकलन

( लोरी, पर्वगीत, क्रीड़ागीत, पढ़ाई–लिखाई, आंण–भ्वीण )


गीत संकलन : **हेम पन्त**

डिजाइन : **विनोद सिंह गड़िया**

आवरण चित्र : **भाष्कर भौर्याल**

बालचित्र : **वसुधा, वत्सल और मीनाक्षी**

परामर्श एवं सहयोग – **सर्वश्री नरेन्द्र सिंह नेगी, भीष्म कुकरेती, देवेश जोशी, चारू तिवारी, महावीर रवांल्टा, मनोहर चमोली 'मनु', दीपक बेंजवाल।**

सन्दर्भ - **गोविंद चातक जी तथा डॉ. नंदकिशोर ढौंडियाल के संकलन, www.MeraPahadForum.com, Ghaseri यूट्यूब चैनल (धर्मेंद्र पन्त)**

CREATIVE UTTARAKHAND

"Spreading Culture to the Next Generation"

# अपनी बात

उत्तराखंड के कुमाऊँ और गढ़वाल अंचल की बोली-भाषा और संस्कृति को लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से इस Ebook में वह परंपरागत बालगीत संकलित किए गए हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी वाचिक परम्परा के माध्यम से हम तक पहुंचे थे। हम सबके जीवन की शुरुआत शिशुओं को सुलाने या बहलाने के लिए गाने जाने वाले गीतों से ही हुई है, उसके बाद लड़कपन में गाये जाने वाले क्रीड़ागीत और त्यौहारों के गीत भी इस संकलन में दिए गए हैं। पुराने समय में घर पर ही प्रारंभिक शिक्षा शुरू कर दी जाती थी, इसके लिए प्रयोग होने वाले कुछ गीत भी यहां शामिल हैं। अभी ऐसे सैकड़ों गीत संकलित होने से रह गए हैं जिन्हें दूरस्थ इलाकों में अभी भी गाया जा रहा होगा।

घुघूति बासूति भाग-1 (कुमाउनी) Ebook को पाठकों से मिले अपार स्नेह और सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप एक ही महीने के भीतर हम इस Ebook का भाग-2 निकालने में सफल हो पाएं हैं। कोरोना लॉकडाउन के इस अभूतपूर्व संकट के बीच हम अधिकांश लोग अपने परिवार के लिए समय निकाल पा रहे हैं, बच्चों को विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से व्यस्त रखने का प्रयास भी कर रहे हैं। हमें उम्मीद है कि इस Ebook में संकलित गीत आपके लिए उपयोगी होंगे। घुघूति बासूति भाग-1 (कुमाउनी) इस लिंक पर उपलब्ध है -

Click here : **Ghughuti Basuti (Kumaoni)**

आपसे अनुरोध है कि इस Ebook को आप विभिन्न माध्यमों से प्रचारित--प्रसारित कीजिए। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का भी इंतजार रहेगा।

**हेम पन्त**
hempantt@gmail.com

**विनोद सिंह गड़िया**
gariya2010@gmail.com

CREATIVE UTTARAKHAND
"Spreading Culture to the Next Generation"

# लोरी

1

निन्दा बाळी एजा हमारु बाळू स्यै जा, दूधी-भात्ति खै जा।
लुकारु बाळू दूधि क रोन्द, हमारु बाळू स्योणक रोन्द।
निन्दा बाळी ऐजा, हमारु बाळू स्यैजा, दूधी-भात्ति खै जा।
लुकारु बाळू, खाणक रोन्द, हमारु बाळू स्योणक रोन्द।
निन्दा बाळी एजा हमारु बाळू स्यै जा, दूधी-भात्ति खै जा।
लुकारु बाळू ब्वै की ओळयूं, हमारु बाळू स्यण की स्याण्यू।
निन्दा बाळी एजा हमारु बाळू स्यै जा, दूधी-भात्ति खै जा।
लुकारु बाळू ख्यनक रोन्द, हमारु बाळू स्योण क रोन्द।
निन्दा बाळी एजा हमारु बाळू स्यै जा, दूधी-भात्ति खै जा।

घुघूति बासूति E-book

निंदिया रानी को दूध-भात का लालच देकर बुलाने की कोशिश।

# लोरी

2

उतलु पुतलु , भलु गिचलू
चुप ह्वे जालू म्यार थुपलु
आ बिरळी आ बिरळी
म्यार थुपलु की गिच्चि काट
आ रे मुसा आ रे मुसा
म्यरा चुन्च्लू की खुट्टी काट
आ रे कवा आ रे कवा
म्यारा कुतुलू कू चुप्पा छांट

घुघूति बासूति
E-book

निंदिया रानी को दूध-भात का लालच देकर बुलाने की कोशिश

## लोरी

3

खुणमुण
खुण-मुण जाँठी त्विन औण
खुण-मुण जाँठी त्विन बाघ गि जौण।
खुण-मुण जाँठी रात कू हिटौया
खुण-मुण जाँठी बाघ कू गिजौया
खुण-मुण जाँठी त्विन रात नि औण
खुण-मुण जाँठी मेरु बाळू नि डरोण
खुण-मुण जाँठी।

घुघूति बासूति
E-book

घुंघरु वाली लाठी से निकलती खुण-मुण की आवाज शिशुओं को पसंद आती है।

## लोरी

4

चिन्दा बिन्दा रावण झोली
घिया कमोळी
घ्यू दूधा की टुप्पुक बिन्दा

घुघूति बासूति
E-book

यह गीत गाते हुए बच्चे को अंगुली
दिखाकर उसके नाक या माथे तक ले जाते हैं और टीका जैसे छूते हैं।

# लोरी

5

से जा से जा निन्दा की बाली
निन्दा की बाली सीणों को आंद
ब्वै बौंण जयी च घास काटनण कू
ब्वै घास काटी ल्यालि फिर दुद्दू पिलालि

घुघूति बासूति
E-book

माँ की अनुपस्थिति में घर के किसी सदस्य द्वारा बच्चे को बहलाने की कोशिश।

## पर्वगीत

1

चला फुल्यारुं फूल कऽ, सौदा-सौदा फूल ल्यौण कऽ।
चला फुल्यारुं फूल कऽ, स्वाणा-स्वाणा फूल ल्यौण कऽ।
चला फुल्यारु किंगारि कऽ, देवता औदुं झिंगरि कऽ।।
वार-पार तेलकि धार, जौंका नौना फुलुक नि आला, तौंका डेरा,
मुच्छाळयो की मार।
चला फुल्यारों डांडा, खुट्टा बैठिन कांडा।
फुल-फुल्यारि घऽर, नागराजा की छतरि छुटि, बरखा लगीं भैर।

फूलदेई पर्व के प्रति बच्चों का उत्साह इस गीत में साफ़ नजर आता है।

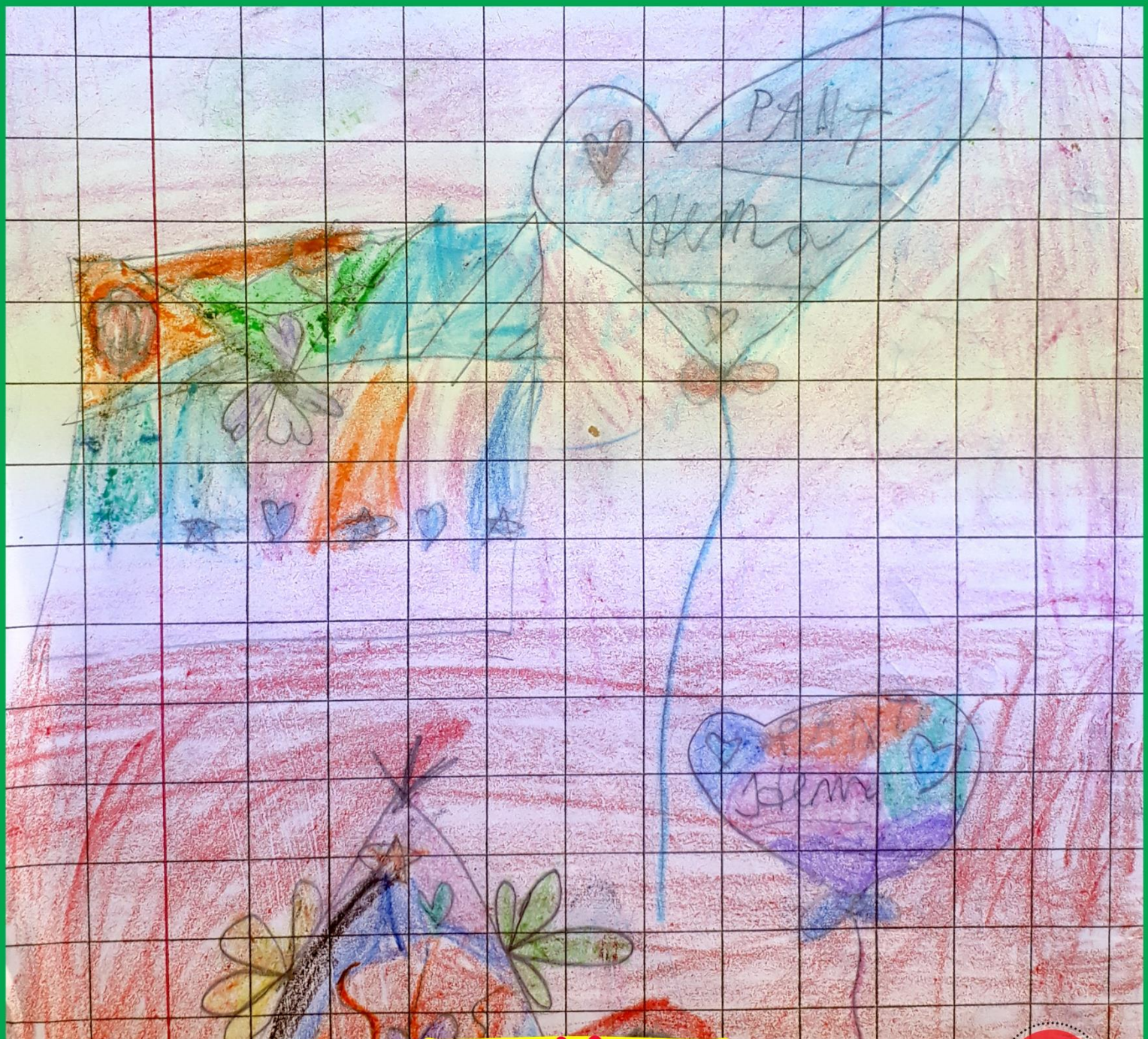

## पर्वगीत

2

फूलदेई फूलदेई फूल संगराद,
सुफल करो नयो बरस तुमकू भगवान।
रंगीला-चंगीला फूल ऐंगे डाला, बोटला हरा ह्वेगे
पौन-पंछी दौड़ी गैन, डाळयूं-फूल हंसदा ऐन
आयो नयो बरस, आज फूल संगराद।

फूलदेई के अवसर पर नववर्ष के स्वागत में बच्चों द्वारा यह गीत गाया जाता है।

# पर्वगीत

3

जै-जै घोघा माता फ्यूंली का फूल
अलिखोलि-पलिखोलि घोघा नचायो
घोघा पुजारी, क्वै नि पायो

घुघूति बासूति
E-book

फूलदेई त्यौहार के दिन सुबह सुबह बच्चे गौरा मैया के प्रतीक "घोघा डोली" को पूरे गाँव में घुमाते हुए यह गीत गाते हैं

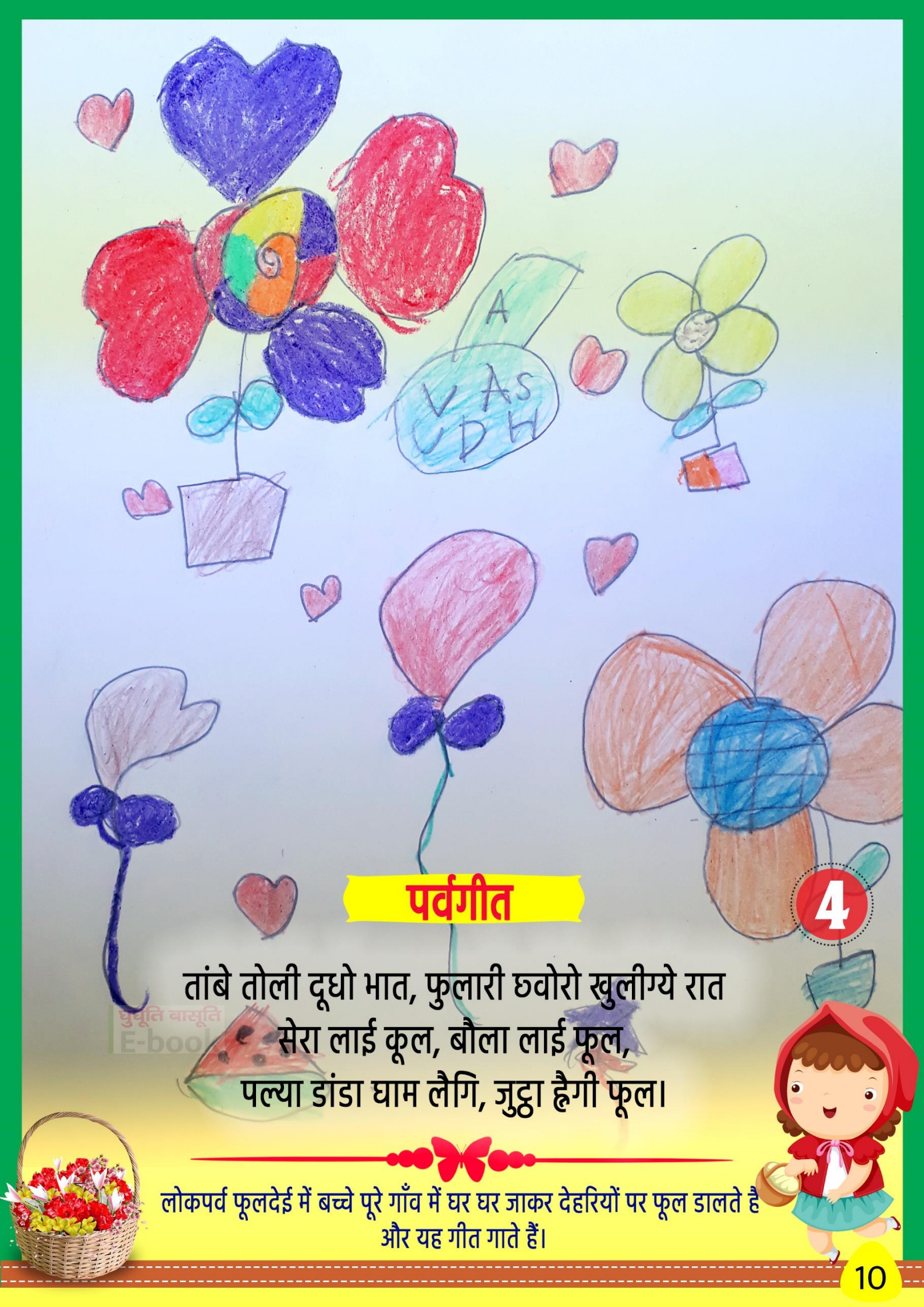

## पर्वगीत

4

तांबे तोली दूधो भात, फुलारी छ्वोरो खुलीग्ये रात
सेरा लाई कूल, बौला लाई फूल,
पल्या डांडा घाम लैगि, जुट्ठा हैगी फूल।

घुघूति बासूति E-book

लोकपर्व फूलदेई में बच्चे पूरे गाँव में घर घर जाकर देहरियों पर फूल डालते है और यह गीत गाते हैं।

## क्रीड़ागीत

1

घुघूति बासूति, क्या खांदी ? - दूद भाती
घुघूति बासूति, मामा कख छ ? - मालकोटी
क्या लालो ? - दूद भातौ
कू खालो ? - दिदा खालो।
दिदा कु जुटठो कू खालो ? - बुबा खालो।
बुबा को जुट्ठो कू खालो ? - ब्वै खाली।
ब्वै को जुट्ठो कू खालो ?- दीदी खाली
दीदी को जुट्ठो कू खालो ?
दीदी को जुट्ठों जीजा खालो।

घुघूति बासूति
E-book

बच्चे को घुटने या पीठ के बल लेटकर झुलाते हुए यह गीत गाया जाता है।

## क्रीड़ागीत

2

घुँघरा माई की दाळ पिसै
घुँघरा माई की दाळ पिसै
ग्यूं जौ का झिंस झिसै
घुँघरा माई की दाळ पिसै
मेरि पळ्योख त्वी बिसै
घुँघरा माई की दाळ पिसै

घुघूति बासूति
E-book

झूला झूलते हुए बच्चे और किशोर यह गीत गाते हैं।

## क्रीड़ागीत

3

बिराळी-बिराळी कख जांदी बल माछा मारणो कू

मारली कन ? छप छप छप छप

काटली  कन ? खर्स खर्स खर्स खर्स

पकैली कन ? छ्याँ - म्यां

खैली कन ? कुर मुर - कुर मुर

तैबरी एक आयो कुत्ता

बिराळी भाजण बैठी सुरक-सुरक

मैं माछा मारणो जान्दो

घुघूति बासूति
E-book

मछली मारने जाती हुई बिल्ली के साथ बच्चों का काल्पनिक संवाद।

## क्रीड़ागीत

4

हे भुलि बिमला, कख पाक्यो छ तिमला
हे भूलि सुमी, कख पकीं छन ऊमी
हे भुलि मौणी, कख पकीं छ कौणी
हे भुलि सत्ति,  कन मरि गे मत्ति

घुघूति बासूति
E-book

नाम के साथ तुक मिलाकर सहेलियों को चिढ़ाने वाला गीत।

## क्रीड़ागीत

5

सोनू मोनू छा द्वी भाई
बीच बाजारम मिंढकी पाई
सोनून बोली घौर लिजौला
मोनून बोली यखमे ई खौंला

मेंढक के साथ सोनू - मोनू की छेड़छाड़।

## क्रीड़ागीत

6

मिर्च करदी स्वी स्वी, हल्दि करदि रंग
मैणु मसालि लांदी गंध, तेल करदि चम
लूण ब्वालि मी नि त, सब्बि धानि कम





रसोई में सामान्य तौर पर उपलब्ध मसालों से परिचय।

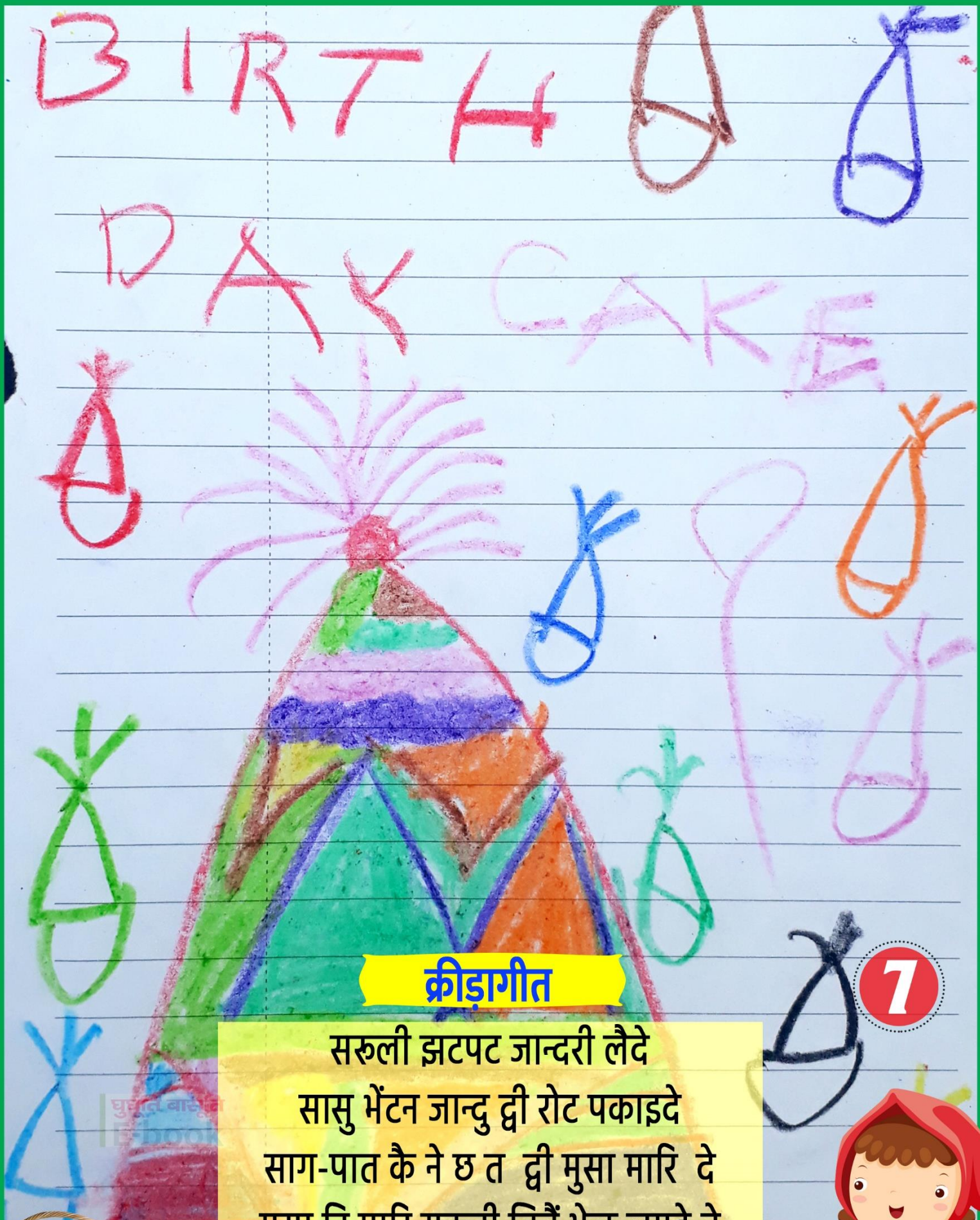


## क्रीड़ागीत

7

सरुली झटपट जान्दरी लैदे
सासु भेंटन जान्दु द्वी रोट पकाइदे
साग-पात कै ने छ त द्वी मुसा मारि दे
मुसा नि मारि सकदी वितैं भेळ लमड़े दे

सास से मिलने जा रही बहू की जल्दबाजी में हड़बड़ाहट।

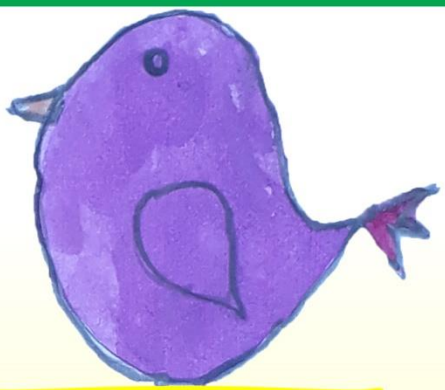

# क्रीड़ागीत

8

भुक्की रै ग्यों ब्याळी , पधनुं करों की स्याळी
स्वाल़ा लायी ब्याळी, नौ मण कंडाळी खै ग्यों
सौ मण बसींगो, नौ मण का अरसा खैने
सौ मण की स्वाळी, भुक्की रै ग्यों ब्याळी
पधनुं करों की स्याळी, स्वाल़ा लाई ब्याळी
बमणु को बाड़ी खेंडो, जजमनुं को झ्वळी
हौरी खुणि चटणि, खांदु गल़ा गळी
भुकी से ग्यों ब्वाळी, भुक्की रै ग्यों ब्याळी
पधनुं करों की स्याळी, नौ मण तिमला खै ग्यों
सौ मण का बेडु, नौ मण काफळ खैने
सौ मण फळीन्ड़ा, फिर भी करदो आळी जाळी
भुक्की रै ग्यों ब्याळी, पधनुं करों की स्याळी
नौ मण झंग्वर खै ग्यों, सौ मण खिचड़ो खैने
लूण राळी राळी,
फिर भी भुक्की रै ग्यों ब्याळी
पधनुं करों की स्याळी

घुघूति बासूति
E-book

पधान की साली को चिढ़ाता हुआ शरारत भरा गीत।

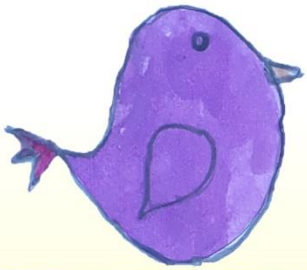

# क्रीड़ागीत

9

पंवळी गौड़ि पंवळी गौड़ि
उज्याण किले खांदी ?
ग्वस्यूं घास नि देंदा।
ग्वस्यूं ग्वस्यूं तुम घास किले नि देंदा ?
डाळी नि मोळदी।
डाळी-डाळी तू किले नि मोळदी?
बरखा नि होंदी।
बरखा-बरखा तू किले नि होंन्दी?
सर्गे नि फटदू।
सर्ग-सर्ग किले नि फटदू ?
बादळे नि औंदा।
बादळ-बादळ तुम किले नि ओदा?
क्चे बुलांदो नि।

फेर लोग बादळ बुलांदा, सर्ग फटदू, बरखा होंदी,
डाळी मोळदी, ग्वस्यू घास देंद, पंवळी खांदी, उज्याण नि जांदी।

ऋतुओं के साथ होने वाले प्राकृतिक बदलाव को इस गीत के माध्यम से बच्चे आसानी से समझ सकते हैं।

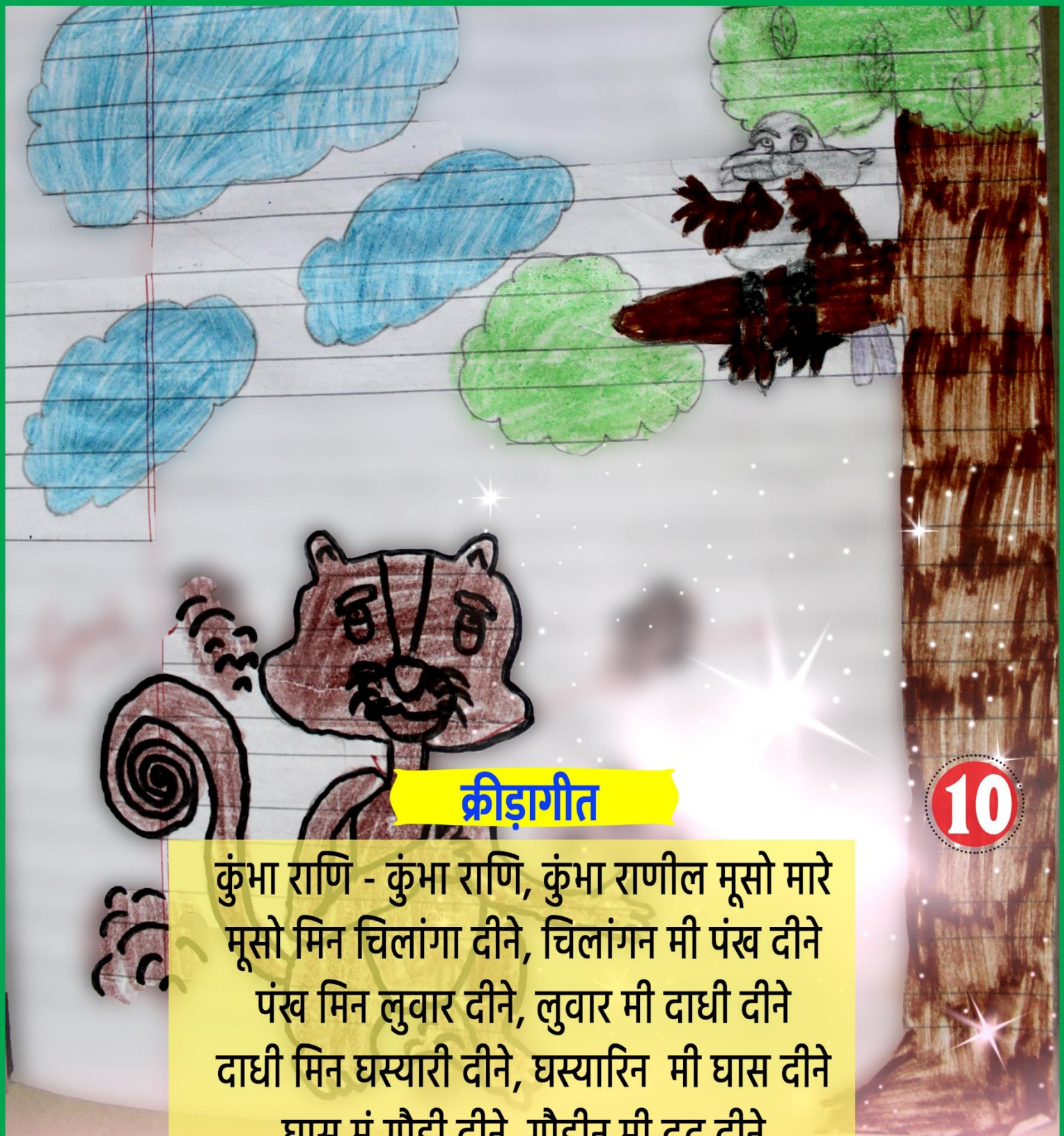

## क्रीड़ागीत

10

कुंभा राणि - कुंभा राणि, कुंभा राणील मूसो मारे
मूसो मिन चिलांगा दीने, चिलांगन मी पंख दीने
पंख मिन लुवार दीने, लुवार मी दाधी दीने
दाधी मिन घस्यारी दीने, घस्यारिन  मी घास दीने
घास मं गौड़ी दीने, गौड़ीन मी दूद दीने
दूद मिन भाई दीने, भाइल मी छड़ा दीने
छड़ा मं भाबी दीने, भाबील मी रोटी दीने
रोटी मिन कुत्ता दीने, कुत्तान मेरी टांग काटी

घुघूति बासूति
E-book

दिवास्वप्न देखने वाले एक दुर्बल व्यक्ति पर व्यंग्य करता हुआ गीत ।

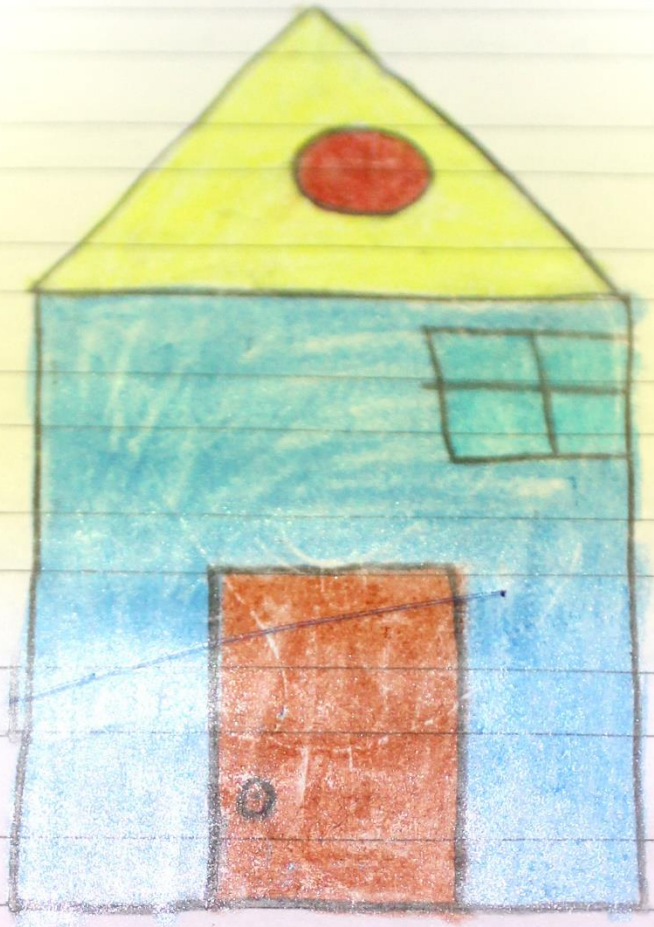

## क्रीड़ागीत

11

कुएड़ी तू अब फट-फट,
त्वै मैं आगल द्युलो, तांगल द्युलो,
ल्वै मसाण को घट्ट रिंगोलो,
डुंडी बिराळी गाड़ बगौलो,
बामणू की छोरी सांगों तरौलू,
कुएड़ी तू अब फट-फट।

घुघूति बासूति
E-book

कोहरे से अब छंट जाने का निवेदन करता हुआ गीत।

## क्रीड़ागीत

12

बान बगटे था-था,
चौलु मुठी था-था,
डुंडी बांगणी लचक पौ,
राजा बोलद जल्दी ओ,
नौले मेर गुंदोले,
नौली लोड़ तिलु कू तेल,

रँवाई बोली का क्रीड़ागीत।

घुघूति बासूति
E-book

## क्रीडागीत

13

छम छाणा, मोत्यूं दाणा,
प्वार भटै ऐग्या उदै राणा,
उदै राणा की सिंगी बाजी
सिंगी मिना तोड़ि-ताड़िकी जल्वट ख्याया,
जल्वट मीतैं पांग मीला,
पांग मीना लुआर द्याया,
लुआरन् मीतैं दाथी द्याया,
दाथीन् मीना घास काटा,
घास मीना गौड़ी द्याया,
गौड़ीन् मीतैं दूध द्याया,
दूद मीना गंगा चारा,
गंगल् मीतैं सैर द्याया,
सैर मीना राजा द्याया,
राजाल् मीतैं घोड़ी द्याया,
मि गौं पिपली अर-
मेरी घोड़ी चाफळम् चिफळी।

घुघूति बासूति E-book





कृषि और पशुपालन से सम्बंधित बालगीत।

# पढ़ाई-लिखाई

1

कंदनु का
बाईमति कि
देणै की
उड़तालु कु
बडेरे कू
एक लग के
दो लग कै
लपन्या को
दुपन्या कौ
स बिन्दु कं
दुवासरु बिन्दु कः

घुघूति बासूति
E-book

बारहखड़ी लिखने की सरल विधि सिखाने का गीत।

# पढ़ाई-लिखाई

2

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ
धारा में का गैणा सैगे
ओ औ अं अः
कखड़ी गघड़ी यं
चछड़ी जझड़ी यं
टठड़ी डढड़ी ण
तथड़ी दधड़ी न
पफड़ी बभड़ी म
यरड़ी लवड़ी शषड़ी
सहड़ी क्ष त्र ज्ञ

घुघूति बासूति
E-book

स्वर और व्यंजन को गीत के रूप में याद करने की आसान विधि।

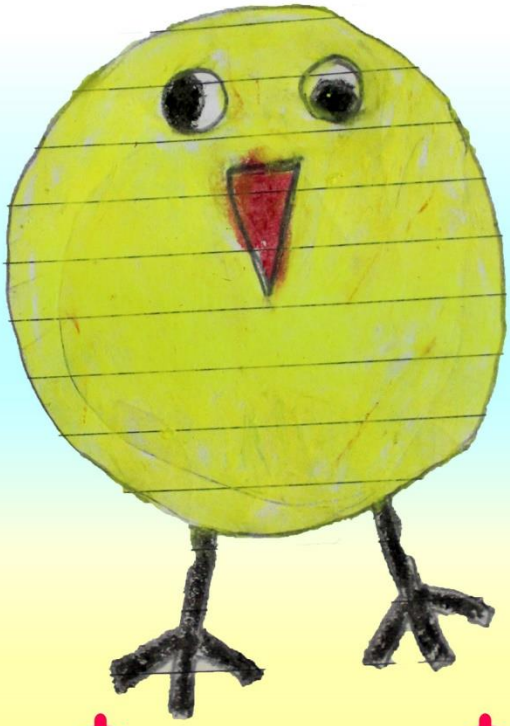

## पढ़ाई-लिखाई

3

एक - म्यारा खुट्टा सेक

द्वी - से पाणी पी

तीन - गोर हर्चि गीन

चार - अब चल घार

पांच - अब पे ब्यटा छांछ

छै - ल्यो बुबा दै

सात - पकड़ म्यारु हाथ

आठ - चल बटा बाट

नौ - पकड़ म्यारा पौ

दस - अब कैर बस

घुघूति बासूति
E-book

छोटे बच्चों को गिनती सिखाने का सरल तरीका।

# पहेलियां (आंणा-भ्वीणा)

**1**

बत्तीस भै कुटदारा
यो नौनी स्वेरदारी

**2**

सात बैन्यूं यकु घाघरु

**3**

काळी मुण्डी, धिमकि आग
मन्न बचण, अपना भाग

**4**

धार मां
तिल खत्यां

**5**

तू हिट
मैं औन्दु छौं

**6**

मुंड मा म्यारो छारु च
इन च बुल्यां जोगि च
पेट मेरो गगड़ान्दु च
इन च बुल्यां रोगि च

**7**

बुतत, बातत जामत जू
काटत फाटत फाटत फू
कूटत कूटत फूँकत फू
थड़कत भड़कत भड़कम भू
मार सड़ाबड़ सपड़म सू

**8**

काली कलचुण्डी छौं, डाला मथि रौन्दु छौं
स्वाद मेरु खट्टू मिट्ठू, गोल गोल गिन्दु छौं

**9**

बिना खुट्यूंकि जान्द सात समुन्दर पार,
बिना गिच्चिक ब्वल्दि छ, ठीक तेरो घरबार

**10**

बौण जांद बगत घर मुख
घर आण बगत बौण मुख

**11**

एक छोट्टू सी फकीर
वैक पुटकी मां लकीर

**12**

लाल बखरी पाणी खैक आणा,
सफेद बखरी पाणी खाणा कुन जाणा।

घुघुति बासुति E-book

1-दांत और जीभ 2-नींबू 3-बंदूक 4-आसमान में तारे 5-दरवाजे 6-हुक्का 7-कड़ी / छिंछड़ा 8-किरमोड़ा
9-चिट्ठी 10-कंधे में रखी कुल्हाड़ी 11-उड़द दाल 12-पूड़ियाँ (तलते समय)